d{kk & VI

पाठ 1 धर्मराज युधिष्ठिर 1

पाठ 2 पुरूषोत्तम श्री राम 11

पाठ 3 सुभाषित वचन 20

1

/kejkt ;qf/kf"Bj

प्रिय शिक्षार्थी, आपने अपने दादा–दादी, नाना–नानी माता–पिता या परिवार के बड़े लोगों से महाभारत की कहानी सुनी होगी तथा पाण्डवों के बडे भ्राता युधिष्ठिर के विषय में थोडा–बहुत जानते होंगे। इस पाठ में हम युधिष्ठिर की शालीनता तथा उसके व्यवहार में उदारता के विषय में पढ़ेंगे। किसी भी परिस्थिति में धर्म का पालन करने के कारण युधिष्ठिर को धर्मराज के नाम से भी जाना जाता है।

mís';

यह पाठ पढने के बाद आप सक्षम होंगे:

- धर्मराज युधिष्ठिर की कहानी समझ पाने में;
- उत्तम व्यवहार के विषय में जान पाने में;
- संयुक्तवाक्य, कारक, लिंग, विभक्ति, लकार के विषय में जान पाने में; और
- संस्कृत के वाक्यों का निर्माण कर पाने में।

1.1 ely dgkuh Hkkx&1

ik.Megkjkt L; i=% /kejkt% i¥pik.Mo'k T;s"B%A vL; ekrk dUrhA vL; ;f/kf"Bj% bfr vij uke orrA v; /kejkt% ;e/kejktL; oj.k tUe çklrokUkA thou lonk /kekpj.k dou v; þ/kejkt%ß bR;o çfl)%A ,"k% lk{kkr /keL; v'kr% tUe çkI; /keL; efr% bo vklhrA vr% tuk% lo ,u ^/kejkt%* bfr ukEuk vk°o;fUr LeA ,rfLeu /k;] fLFkjrk] lfg".krk] uerk] n;kijrk vpyçhfr% bR;kn;% vuds x.kk% vkluA ,"k% LoL; 'khyL;] lnkpkjL;] fopkj'khyrk;k'p dkj.kr% ckY;s ,o vrho tufç;% vHkorA ,"k% Lothous fdefi voekuu lk< 'kDukfr LeA fdUrq /keL; viekuu lk< u 'kDukfr LeA /ke%] çhfr%] lgu'khyrk;k% brk·fi J"Benkgj.kk txfr ,u fogk; vU;kr· fdefi ukfLrA

;nk ik.Mok% ou çfLFkroUr% rnk gfLrukijL; çtk% lok% n%[ku dkjoku n'k;UR;% Loxgkf.k R;äok ,r% lg çfLFkroR;%A rnkfi ;f/kf"Bj% dkjok.kk fo"k;s n"k.k u –rokuA tukuk lek/kku –Rok çfr çf"krokuA rFkkfi dpu ckã.kk% ik.Mo% lg xroUr%A rnk /kejktL; fpUrk vkjC/kk] ,r"kk HkktuL; 0;oLFkk dk\ bfrA Lod"Vkuk

/keZjkt ;qf/kf"Bj

d{kk & VI

fVIi.kh

fo'k; fpUrk ukfLr pnfi brj"kk d"V æ"V u 'kDukfr LeA vUr ,"k% l;noL; vkjk/kuk —Rok ,de viod ik= çklrokuA rfLeu — r% fdf¥pr ikd% vfi v{k;% Hkofr LeA ,ru r ou lfUr pnfi vfrfFk tukuk ckã.kkuk p Hkk tu nÙok vuUrje ,r Hkk tu dofUr LeA ouokl vfi vkfrF;/keL; ikyu —roku v; /keZjkt%A

,ru /keçE.kk vk—"Vk% J"Vk% egf"k.k% ouokl le;s·fi r"kk lehi vkxR; fr"BfUr LeA ;Kkukeu"Bku dofUr LeA egkjkt% ;qf/kf"Bj% ^vtkr'k=q%* bfr ukEuk vfi çfl)% vklhrA dukfi lg rL; ojHkko% uklhrA 'k=q.kk fo"k;s·fi rL; ân; lonk lnHkkok% ,o HkofUr LeA ;% vidkj djkfr rLe vfi midkjdj.k T;s"Bkuk J"B% x.k% bfr ;}nfUr] rL; okD;L; lkFkD; /keZjktL; thou tkrfefrA

ljykFk &

पाण्डु महाराज के पाँच पुत्रों में धर्मराज सबसे बडे पुत्र थे। इनकी माता का नाम कुन्ती था। इनका दूसरा नाम युधिष्ठिर था। इनका जन्म धर्म के देवता यमराज के आर्शिवाद से हुआ था। जीवन में सदा धर्म का पालन करने के कारण ये धर्मराज के नाम से प्रसिद्ध थे। साक्षात धर्म के देवता अर्थात् यमराज के अंश होने के कारण ये धर्म की साक्षात मूर्ति की तरह थे। इसलिए सभी लोग इन्हें धर्मराज के नाम से ही बुलाते थे। इनमें धैर्य, स्थिरता, सहिष्णुता, नम्रता, दयापरायजता, स्नेह जैसे बहुत से गुण थे। ये अपने शीलस्वभाव, सदाचार और विचारशीलता के कारण बाल्यकाल से ही लोकप्रिय थे ये अपने जीवन में किसी भी तरह की

अवमानना सहन कर सकते थे परंतु धर्म का अपमान नहीं सह सकते थे। धर्म, प्रीति, सहनशीलता का इनसे अच्छा उदाहरण कहीं और नहीं मिल सकता था।

जब पाण्डव वन में जा रहे थे तब हस्तिनापुर की प्रजा दुख से व्याकुल होकर कौरवों को भला–बुरा कहते हुए अपने घरों को त्याग कर इनके साथ ही आने लगी। तब भी युधिष्ठिर ने कौरवों के विषय में कुछ गलत नहीं कहा। बल्कि लोगों को समझाबुझाकर वापस भेज दिया। फिर भी कुछ बुद्धिजन पाण्डवों के साथ आ गये । तब धर्मराज को चिन्ता हुई कि इनके भोजन की व्यवस्था कैसे होगी? उन्हें अपने कष्टों की चिन्ता नहीं थी परंतु दुसरों के दुख–दर्द वो नहीं देख सकते थे। अंत में उन्होंने सूर्य देव की प्रार्थना कर एक अपूर्व अक्षय पात्र प्राप्त कर लिया। इस पात्र में भोजन कभी समाप्त नहीं होता था। इससे वे वन में रहते हुए भी अतिथियों तथा बुद्धिजनों को भोजन खिलाकर बाद में स्वयं भोजन ग्रहण करते थे। वन में रहते हुए भी अतिथ्य धर्म का पालन करने से ही ये धर्मराज थे।

इनके धर्म के प्रति निष्ठा को देखकर वनवास में रहने पर भी इनके पास गुणीजन ऋषि इनके पास आ गये थे। किसी के साथ भी इनका वैर भाव नहीं था। शत्रु के प्रति भी इनके मन में सदा सद्भावना ही रहती थी। जो उपकार करते हैं उनका उपकार करना श्रेष्ठजनों का श्रेष्ठ गुण कहा जाता है, इस वाक्य का सार्थक्य धर्मराज के जीवन में था।

/kekjk ;kf/k"Bj

ikBxr iz'u& 1-1

1. निम्नलिखित का एक वाक्य में उत्तर दीजिए–

i. धर्मराजः कस्य वरेण जन्म प्राप्तवान् ?

ii. धर्मराजः कस्य अवमाननं सोढुं न शक्नोति ?

1.2 ewy dgkuh Hkkx&2

dnkfpr~ ik.Mok% }Srous vklUuA rnk ?kk"k;k=k;k% dkj.kr% nq;ksZ/ku% LoL; efU=fHk%] vuqt%] jkKhok lL; efgykfHk%] lg cgrs lSU;s LoL;k—R;] LoL; oHkoa –"Vok ik.Mok% vlq;ke vuHkoUrq bfr n#í'ku r=o ik.Mokuk dVhjL; lehis fo|eku ljkoj tyØhMkFk xrokuA rr% ioZe ,o xU/kok% ljkojL; vkØe.k —roUr% vklUuA nq;ksZ/ku% r% lg l?k"k.k —rokuA 'kh"k.k;q)s xU/kok.kk fot;% vHkorA rs jkK;k lg nq;ksZ/kuL; vfi cU/ku —roUr%A rnk ;kf/kf"Bj% vuqtku onfr ;r~ ^HkoUr% xRok nq;ksZ/ku cU/kukr~ ekpf;Rok vku;UrqA l% vLekd 'k=% pnfi bnkuh d"Vs vfLrA

d"Vdkys lkgk¸;dj.k rq vLekd /ke%A l% rq vLekd lgknj% ,oA vLekde mifLFkrk rL; ,rk–'kh nxfr% u Hkorq bfrA {k.kkH;Urjs vtqu% "kjo"k.ku xU/kok.kke vg³dkj Hk¥tf;Rok vuqt%] jkK;k lg nq;ksZ/kuL; cU/kekpu —rokuA ;kf/kf"BjL; ân;o'kkY;s –"Vok rs lo vk'p;pfdrk%A ,o rL; ân;o'kkY;ek lhRkA

egkjkt% ;f/kf"Bj% J"Bfo}kl%] uhfrK%] /keZK% p vklhrA rfLeu vnHkqrk lekurk vklhrA dnkfpr d'pu% ckã.k% dL;fpr o{kL; "kk[kk;ke vfXugk=L; mi;kxk; o{kL; lfe/kk% LFkkfiroku vklhrA d'pu% gfj.k% vkxR; LoL; 'k³xu o{kL; ?k"k.k —rokuA rnk rL; 'k³x ,"k% lfe/kkfXu% lyXu% vHkorA ru fouk vfXugk=L; dk;Z u pyfr LeA vr% l% ckã.k% vkxR; lfe/kk% vkuh; nnkrq bfr ;f/kf"Bj çkfFkrokuA i¥pik.Mok% vfi gfj.kL; i"Br% /kkforoUr%A lo"k i';Rl ,o l% gfj.k% d=kfi v–';% vHkorA ik.Mok% cgJkUrk%] fiikflrk% p vHkouA

/kejktL; vkKk çkI; udy% tyL; vUo"k.k dr çfLFkrokuA LoYi nj ,o ru ,d% lUnjtyk'k;% çkIr%A lehi xRok ;nk ty ikrq ;Ru —roku rnk dkpu v'kjhjok.kh JqrkA ^çFke e ç'uL; mÙkj nnkr] vuUrj ty ficr* bfrA fdUrq fiikflr% udy% v'kjhjok.;k% fuy{;—rokuA ty ihroku pA vu{k.k fu thoh% Hkwfek Hkwek ifrrokuA udy%A rr% ;f/kf"Bj% Øe'k% lgnoe] vtqu] Hkhe lu p çf"krokuA =;k.kkefi lk ,o fLFkfr% tkrkA vUr /kejkt% Lo;a tyk'k;L; lehi xrokuA

lk·fi v'kjhjok.kh JqrokuA ifrrku vuqtku vfi –"VokuA rkork l% fo'kkydk; d¥pu ;{k –"VokuA l% ;{k% onfr ^e ç'ukuke mÙkje vnÙok ty ihRok Hkor% vuqtk% ,rk–'kh fLFkfr çkIroUr%A Hkoku vfi mÙkjnkuu fouk ;fn ty ficfr rfg ej.k çkIlukfr* bfrA ;f/kf"Bj% mÙkj nkrq lTt% vHkorA ;{kL; loH;% ç'uH;% ,"k% lfephur;k mÙkj nÙok rL; lek/kkuu p —Rok vuqtku çkIrokuA

,o /keZjkt% Lothou /keZ ifjikY; jf{krokuA o;efi 'kfäefrØE; /keZekpjkeA

ljykFk &

किसी समय पाण्डव द्वैतवन में थे। तब उनके सामने अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए, दुयोधन अपने मंत्रियों, छोटे भाईयो, औरतों तथा एक बडी सेना के साथ पाण्डवों की कुटी के पास सरोवर में जल क्रीडा के लिया गया। उसका उद्देश्य पाण्डवो को नीचा दिखाने का था। उसके वहाँ पहुँचने से पहले ही उस तालाब को गन्धर्वों अपने कब्जे में ले लिया था। इसलिए गन्धर्व तथा दुर्योधन के बीच युद्ध छिड़ गया। युद्ध में दुर्योधन की पराज्य हुई। उन सभी को गन्धर्वों ने कैद कर लिया। उस समय युधिष्ठिर ने दुर्योधन को बचाकर लाने के लिए अपने छोटे भाईयों से कहा। भले ही वह हमारा शत्रु है परंतु वह कष्ट में हूँ। संकट के समय सहायता करना हमारा धर्म है। वह हमारा भाई ही तो हैं। हमारे रहते हुए उसकी ऐसी दुर्गती नहीं होनी चाहिए। क्षणभर में अपने बाणों की वर्षा से अर्जुन ने गन्धर्वों का अहंकार तोड दिया और उनसभी के साथ दुर्योधन को बंधन से मुक्त कर दिया। युधिष्ठिर के विशाल हृदय को देखकर वे आश्चर्यचकित थे। इस तरह का उनका विशाल हृदय था। महाराज युधिष्ठिर श्रेष्ठ विद्वान, नीतीज्ञ और धर्म के ज्ञाता थे। उसमें समानता का अदभूत गुण था।

एक बार कोई ब्रह्मण किसी पेड की शाखा पर अग्निहोत्र यज्ञ में उपयोग के लिए वृक्ष की समीधा स्थापित कर रहा था। तभी कोई हिरण आकर अपने सींग से वृक्ष का घृषण करने लगा। उसके सींग से वह समीधा की अग्नि संलग्न हो गई। उसके बिना अग्निहोत्र कार्य संभव न था। अतः वह ब्रह्मण्र युधिष्ठिर के पास आकर समीधा अग्नि लाने के लिए

निवेदन करने लगा। पाँचों पाण्डव उस हिरण के पीछे दौडने लगे। सबके देखते–देखते वह हिरण कहीं पर अदृश्य हो गया। पाण्डव बहुत थक गये थे तथा प्यास से व्याकुल भी थे।

धर्मराज की आज्ञा पाकर नकुल जल की खोज में वहाँ से चला गया। कुछ दूरी पर ही उसने सुन्दर जलाशय देखा। पास में जाकर जैसे ही उसने जल पीने का प्रयास करने लगा तभी आकाशवाणी हुई। पहले मेरे प्रश्न का उत्तर दो, उसके बाद ही जल ग्रहण कर सकते हो। किंतु प्यास से व्याकुल नकुल ने आकाशवाणी की तरफ ध्यान नहीं दिया और पानी पी लिया। तभी नकुल निर्जीव होकर जमीन पर गिर पड़ा। उसके बाद युधिष्ठिर ने क्रमशः सहदेव, अर्जुन तथा भीम को भेजा। उन तीनों के साथ भी वैसा ही हुआ। अन्त में स्वयं धर्मराज जलाशय के समीप गये। उन्होंने भी आकाशवाणी सुनी नीचे गिरे हुए अनुजों को भी देखा। वहाँ पर उन्होंने एक विशालकाय यक्ष को देखा। उस यक्ष ने कहा, पहले

/keZjkt ;qf/kf"Bj

मेरे प्रश्नों का उत्तर दिये बिना जल ग्रहण करने के कारण आपके छोटे भाईयों की यह स्थिति हुई है। यदि तुम भी मेरे प्रश्नों का उत्तर दिये बिना जल ग्रहण करोगे तो मृत्यु को प्राप्त हो जाओगे। युधिष्ठिर उत्तर देने के लिए तैयार हो गया। उसने यक्ष के सभी प्रश्नों का सही उत्तर तथा समाधान देकर अपने भाईयों को फिर से प्राप्त कर लिया। इस तरह धर्मराज ने हमेशा अपने जीवन में धर्म का पालन और रक्षा किया। हमे भी प्रदर्शन से त्याग कर हमेशा धर्म का पालन करना चाहिए।

ikBxr iz'u& 1-2

1. गन्धर्वाणाम् अहङ्कारं कः भञ्जितवान्?
2. युधिष्ठिर कस्य उत्तरं दातुं सज्जः अभवत्।

vkius D;k lh[kk\

- धर्मराज युधिष्ठिर के चारित्रिक गुण।
- संस्कृत के सरल वाक्यों को पढना तथा लिखना।

ikBkr iz'u

1. सृजनात्मक कार्य–

   i. अस्मिन् पाठे विद्यमानान् अव्यय–पदानि चित्वा लिखत ।

   ii. महाभारतस्य कर्तृविषये अध्यायविभागे च विशेषाध्ययनं कुरुत ।

mÙkjekyk

1.1

1. यमधर्मराजस्य
2. धर्मस्य

1.2

1. अर्जुनः
2. यक्षस्य